डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा"

श्यामा

माता-पिता बहुत देखभाल करने के बाद अपनी बेटी का रिश्ता कहीं पर करते हैं। किसी के भी माथे पर यह नहीं लिखा होता कि वह कैसा इंसान है। ऐसे ही श्यामा के मां बाप भी अपनी बेटी के लिए कोई एक अच्छा सा रिश्ता तलाश रहे थे।

"अरे भाई कोई अच्छा रिश्ता हो तो बताओ, श्यामा बिटिया इस साल बी.ए. पास कर ली है और अब बी.एड. की तैयारी भी कर रही है।"सोहन बाबू ने अपने परम मित्र श्याम लाल से कहा। वे अपनी बेटी की शादी उसके बी.एड. करने के साथ ही साथ कर देना चाहते थे। श्यामा उनकी इकलौती संतान थी। एक बेटा विलास भी था जिसे उन्होंने गोद ले रखा था। कानपुर के किदवई नगर में उनकी एक आलीशान कोठी थी। घर में तीन चार नौकर हमेशा रहते थे। उनके पास अथाह पैसा था, इसी कारण वे रिश्ता भी ऐसा चाहते थे जो सर्वगुण संपन्न हो। उस लड़के के पास सुन्दरता के साथ-साथ सम्पन्नता भी होनी चाहिए । वह डॉक्टर, इंजीनियर या किसी बड़े पद पर कार्यरत भी होना चाहिए।

" लड़का तो है एक लेकिन उनसे बात करनी पड़ेगी।उनसे बात करके फिर मैं आपको बताता हूँ।" श्याम लाल ने कहा।

"अरे फिर भी कुछ तो बताओ उसके बारे में।" सोहन बाबू को जब भी कोई रिश्ता बताता वे बहुत ही बारीकी से उसके बारे में जानकारी हासिल किया करते थे।

लड़का तो जैसा कि तुम चाहते हो डॉक्टर है। लड़का केवल दो भाई ही हैं, उसपर अन्य कोई भी जिम्मेदारी भी नहीं है , मतलब उनकी कोई बहन भी शादी के लिए नहीं है। बड़ी बहन की शादी हो चुकी है। उसके पिता जी भी अलीगढ़ में किसी इन्टर कॉलेज में लेक्चरर हैं। लड़के को भी मैंने देखा है, वह बहुत सुन्दर है।

"हाँ तो तुम जल्दी ही वहाँ चले जाना और फिर बिटिया के बारे में भी बता देना। वे लोग जितना भी चाहेंगे मैं देने के लिए तैयार हूँ।" सोहन बाबू ने कहा।

"ठीक है, परेशान मत हो, अबकी बार जब भी मैं अलीगढ़ जऊँगा, उनसे बिटिया की बात जरूर चलाऊँगा।" श्याम लाल ने अपने मित्र के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

अगर देखा जाए तो सभी रिश्तों में एक मित्र का ही रिश्ता ऐसा होता है जिससे इंसान खुलकर बात कर सकता है। किसी भी तरह की समस्या उसके समक्ष रख सकता है और मित्र भी अपने मित्र की परेशानियों को अपना समझ कर उनका निदान करने की चेष्टा करता है। हालांकि आज के जमाने में इस तरह के मित्रों की संख्या तो बहुत कम ही मिलती है।

सोहन बाबू ने भी अपने मित्र को अपनी परेशानी बता कर राहत की साँस ली कि उनका यह मित्र उनकी समस्या का समाधान अवश्य ही निकालेगा।

पास में ही बैठी मोहिनी देवी भी उन लोगों के हां में हां मिला रही थी लेकिन उनको एक बात की चिन्ता थी कि बेटी श्यामा इतनी मोटी है, पढ़ाई भी
कोई खास नहीं की है। क्या पैसे के बल पर ही यह अनमेल रिश्ता टिक पायेगा। उन्होंने भी अपनी यह चिंता जाहिर ही कर दी। श्याम लाल के जाने के बाद उन्होंने डरते-डरते अपनी बात पति के सामने रख ही दी।

"सुनो जी, तुम जो ये सुन्दर लड़का और डॉक्टर, इंजीनियर करते रहते हो वह भी तो अपने लिए सुन्दर लड़की और डॉक्टर, इंजीनियर लड़की तलाशेगा।" ऐसा भी तो सोचा जा सकता है।

"तुम भी पता नहीं कैसी कैसी बातें करने लगती हो। आज के समय में सबसे बड़ा पैसा है। पैसे से तो क्या नहीं हो सकता है? अब तुम बस देखती रहो।" सोहन बाबू ने अपनी पत्नी को समझाते हुए कहा।

सोहन बाबू कानपुर शहर के नामी-गिरामी व्यक्ति थे। उनकी कपड़ों की बहुत बड़ी दुकान थी जिसपर काम करने वाले दस बारह कर्मचारी काम
किया करते थे। उनके साथ ही साथ बीए करने के बाद उनका गोद लिया हुआ बेटा विलास भी दुकान को सँभालने लगा था। आमदनी भी काफी अच्छी थी सो दान पुण्य का काम भी खूब किया करते थे। तीन चार मकान भी बनवा कर किराए पर उठा रखा था। उसका किराया भी अच्छा खासा आता था। कुल मिलाकर लक्ष्मी जी की उनपर बहुत कृपा थी। उनमें बस एक ही कमी थी कि वे सोचते थे कि पैसों के बल पर सबकुछ खरीदा जा सकता है।

श्यामा पढ़ने में मीडियम ही थी न बहुत ज्यादा और न ही बहुत कम। घर में किसी चीज की कमी नहीं थी सो कमी क्या होती है यह भी नहीं पता था। घर के काम-काज नौकर ही करते थे तो उसने कभी भी घर का काम भी नहीं किया था। उसे तो केवल पढ़ने और खाने व खेलने के अलावा कुछ भी नहीं पता था। माँ ने उसे एक गिलास पानी भी उसके हाथ में ही थमाया था वह इतनी दुलारी थी। उसकी एक आदत यह भी थी कि ज्यादातर वह सोई ही रहती थी। इसका प्रभाव भी उसके शरीर पर ग़लत ही पड़ा और वह दिन पर दिन मोटी होती चली गई। माँ उसे हमेशा ही टोकती रहती, "श्यामा बेटा थोड़ा सुबह-शाम टहल लिया कर बेटा, कुछ व्यायाम भी करना सीख ले,तेरे साथ की सब लड़कियों को देख कितनी पतली-पतली सी हैं और तू है कि सबका ही वजन लिए चली जा रही है।"

माँ तुम भी, रोज जाने क्या क्या कहने लगती हो।रोज सुबह-सुबह कौन उठता है भला? शाम को तुम्हारे साथ ही छत पर टहलती तो। हूँ। अब ये वजन बढ़ता ही जा रहा है तो इसमें भला मैं क्या करूँ? श्यामा अपनी माँ के गले से चिपकते हुए इस तरह से बोलती कि माँ भी चुप लगा जाती।

इधर जबसे डॉक्टर साहब के रिश्ते की बात चल रही थी तब से तो श्यामा ने रस्सी कूदना और टहलना सभी कुछ चालू कर दिया था। सुबह-सुबह नींबू पानी पीना, बहुत कम खाना खाना, दोपहर को केवल सलाद खाना सभी कुछ तिकड़म वह लगा रही थी लेकिन वज़न था कि टस से मस होने का नाम

नहीं ले रहा था। हाँ आँखों के नीचे काला -पन जरूर छाने लगा था। चेहरा भी बुझा-बुझा सा नज़र आने लगा था। उसकी हालत देखकर माँ ने उसे अच्छे से अच्छे डॉक्टर को दिखाया, अच्छे से अच्छे डाइटीशियन को दिखाया पर उसके बढ़ते वजन को कम करने में सभी नाकाम रहे। कुछ दिन थोड़ा-सा सा वज़न कम होता और फिर किलो डेढ़ किलो बढ़ जाता।

लड़के वालों को श्यामा के फोटो के साथ ही साथ उसका पूरा बायोडाटा तैयार करा कर भेजा गया था और साथ में ही उसकी जन्म कुंडली भी। लड़के को लड़की की फोटो और पढ़ाई कुछ भी नहीं पसन्द था। फिर भी उन लोगों ने इस रिश्ते के लिए हाँ कर दिया था। वास्तव मे लड़के वालों को लड़की से ज्यादा उसकी प्रापर्टी में ज्यादा दिलचस्पी थी। लड़का डॉक्टर तो बन गया था किन्तु अपना नर्सिंग होम खोलने के लिए उनके पास पैसा नहीं था। अगर यह रिश्ता हो जाता तो लड़के के लिए नर्सिंग होम खुलवाने के लिए उसके ससुर स्वयं ही आगे आ जाते या कहें कि उनको आना ही पड़ता आखिर उनकीअपनी बेटी के भविष्य का सवाल जो होता।

लड़के वालों ने रिश्ते के लिए हाँ कह दिया। अब लड़का देखने जाना था जो एक औपचारिकता मात्र ही कहा जा सकता था।

लड़के को देखने जाने के लिए पंडित जी से शुभ मुहूर्त निकलवाया गया। अब चार- पाँच रिश्तेदारों और बड़े लोगों को साथ में लेकर सोहन बाबू लड़के वालों के यहाँ लड़के को देखने पहुँच गए। लड़के के पिता विरेन्द्र प्रसाद ने उन लोगों का खूब बढ़ चढ़ कर स्वागत किया।उनका चार कमरों का दो मंजिला मकान था। विरेन्द्र जी के साथ ही लड़के की माँ रौशनी जी भी उन लोगों के आवभगत में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। उनका बेटा विराट तो इतना सीधा नजर आ रहा था कि लग रहा था कि उससे अच्छा रिश्ता तो मिल ही नहीं सकता है। हाँ पैसों के मामले में वे लोग उनसे बहुत ही कम थे।

"बेटा आप ने आगे क्या सोचा है?" सोहन बाबू ने विराट से पूछा।

"जी वैसे तो नौकरी तलाश रहा हूँ लेकिन अगर बजट बन गया तो पापा जी नर्सिंग होम भीखुलवाने का प्लान बना रहे हैं।" विराट ने कहा।

" विरेन्द्र बाबू आप इस विषय में क्या कह रहे हैं?"सोहन बाबू के साथ गए उनके एक रिश्तेदार ने विरेन्द्र जी से पूछ ही लिया।

अब आपको क्या बताऊँ, मैं तो एक प्रवक्ता ही रहा हूँ। इतना पैसा तो नहीं इकट्ठा कर सका हूँ, जो पैसे थे वे इनकी डॉक्टरी की पढ़ाई में लग गया है। गाँव में कुछ खेती है, उसी को हटाकर इनके लिए कोई छोटा मोटा नर्सिंग होम खुलवा देंगे, बाद में उसे ये बढ़ाते रहेंगे।

"अरे विरेन्द्र बाबू अगर सब कुछ ठीक रहा तो फिर आपको किसी भी खेत को बेचने की जरूरत नहीं पड़ेगी।" सोहन बाबू ने अपना पांसा फेंक दिया था।

नर्सिंग होम खुलवाना विरेन्द्र जी के लिए दिवास्वप्न के जैसा ही था। यह तो उन्होंने उन लोगों को सुनाने के लिए खेत बेच कर नर्सिंग होम खोलने के लिए तो जरूर कह दिया था परन्तु वास्तव में तो सच्चाई कुछ और ही थी। विरेन्द्र बाबू के पास गाँव में नाम मात्र की ही खेती थी।

बातचीत खत्म होने के बाद खाना खाने पीने का दौर चला और फिर सोहन बाबू ने लड़के वालों को लड़की देखने आने के लिए न्यौता दे दिया -

"आप लोग भी आइए और मेरी बेटी को देख कर सन्तुष्ट हो जाइए फिर आगे की बात आगे बढ़ाई जाए।"

"जी जरूर, जल्दी ही शुभ मुहूर्त देखकर हम लोग आपकी बेटी को देखने आ जाएँगे।" विरेन्द्र प्रसाद जी ने कहा।

उन लोगों के जाने के बाद वे सभी लोग बहुत ही खुश नजर आ रहे थे। विराट के मन में अपने नर्सिंग होम का सपना साकार होता दिखाई दे रहा था। विरेन्द्र प्रसाद और रौशनी देवी भी खुशी से फूले न समा रहे थे आखिर इतने बड़े घर का रिश्ता जो आया था। वे लोग अब लड़की को देखने जाने के लिए शुभ मुहूर्त के इन्तजार में थे। रौशनी देवी ने लड़की को देने के लिए सोने की चेन , अँगूठी और बनारसी साड़ी भी खरीद ली। उनके लिए लड़की कैसी है कैसी नहीं यह मायने नहीं रखता था, मायने रखता था तो लड़की वाले कितना दहेज दे सकते हैं। यहां तो लड़की वाले नर्सिंग होम ही खुलवाने के लिए तैयार थे उनको अब और क्या चाहिए था।

शुभ मुहूर्त देखकर विरेन्द्र प्रसाद अपने बेटे विराट,पत्नी रौशनी तथा छोटे बेटे सोहन के साथ अलीगढ़ से कानपुर लड़की देखने के लिए आ गए। सभी बहुत खुश थे। चाय नाश्ते के बाद सोहन बाबू ने अपनी पत्नी मोहिनी से बेटी श्यामा को लाने के लिए कहा। मोहिनी ने ब्युटी पार्लर से एक लड़की को खास तौर पर श्यामा को तैयार करने के लिए बुलाया था। उनका उद्देश्य था कि वह श्यामा को इस तरह से तैयार करें कि वह थोड़ी पतली नजर आये और वह हल्के से मेकअप में सुन्दर भी लगे। श्यामा ने गुलाबी सूट पहन रखा था जो किउसपर बहुत सुन्दर लग रहा था। शरीर तो मेकअप से
क्या ही छिपता पर हल्के रंग के गाउन ड्रेस में वह लम्बी और थोड़ी कम मोटी नजर आ रही थी। हल्के गुलाबी ड्रेस के साथ उसी रंग का कढ़ाई किया हुआ दुपट्टा और भी सुंदर लग रहा था।

श्यामा ने आकर सबको नमस्ते किया और फिर माँ के साथ ही खड़ी हो गई।

"अरे बेटा बैठो ,आप खड़ी क्यों हो?" रौशनी जी ने श्यामा को आगे बढ़ कर अपने पास में बैठा लिया। मोहिनी जी भी अपनी जगह बैठ गई।

इस समय सभी की आँखों पर बस पैसा ही छाया हुआ था सो उनको न तो श्यामा की पढ़ाई के बारे में ही कोई दिलचस्पी थी और न ही उसके बढ़े हुए वजन से ही कोई एतराज़ था। गोरे चिट्टे सुन्दर और हैंडसम बेटे के लिए मोटी और साँवली तथा कम लम्बाई की लड़की में ही सारी खूबियां नज़र आ रही थी। जैसा कि उन्होंने पहले से ही मन बना रखा था वे सोहन बाबू से बोले, "मुझे तो आपकी लड़की बहुत पसन्द है। इसे मैं अपनी बेटी बना कर रखूंगा। किसी भी तरह की कमी आपकी बेटी को नहीं होने पायेगी।आप आज्ञा दें तो आगे की विधि सम्पन्न कर लिया जाए।

"अरे क्यों नहीं, अब तो यह आपकी बेटी है। मैं अभी सब इन्तज़ाम करवा देता हूं।"सोहन बाबू ने कहा।

रौशनी देवी सब कुछ अपने साथ ही ले आयी थीं, कुछ चीजें जो नहीं थी उसकी व्यवस्था मोहिनी जी ने

कर दिया।

रोशनी जी ने श्यामा के रोके की विधि सम्पन्न की उन्होंने उसके गले में दो तोले की सोने की चेन पहनाई अंगुली में अंगूठी पहनाई तथा उसकी गोद में पांच बनारसी साड़ी तथा नारियल रखकर टीका लगाया।

"बहन जी,आज से आपकी बेटी मेरी हुई। यह तो ऐसे ही रोका किया है सगाई की रस्म धूमधाम से की जायेगी।" रोशनी जी ने मोहिनी जी से कहा। सभी आपस में गले मिले। सोहन बाबू ने भी लड़के और उसके भाई तथा होने वाले समधी तथा समधन सभी को सोने की चेन तथा कपड़े उपहार में दिए। जितना विरेन्द्र प्रसाद ने ख़र्च किया था उससे चार गुना बढ़ा कर सोहन बाबू ने उन लोगों को उपहार स्वरूप दे दिया। वे लोग खुशी-खुशी अपने घर के लिए रवाना हुए। जाने से पहले डॉक्टर साहब ने श्यामा को अपना फ़ोन नंबर भी दे दिया, "जब जी चाहे बात कर लिया कीजिएगा, मुझे बहुत खुशी होगी।"

श्यामा ने भी शर्माते हुए नम्बर नोट किया और वादा किया कि वह उसे फोन करेगी।

श्यामा की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। उसकी सहेलियां उसे मोटी होने के नाते जाने क्या-क्या सुनाती रहती थीं, लेकिन उसकी किस्मत देखो कि कितना सुन्दर, मृदुभाषी और डॉक्टर लड़का उसका पति होने जा रहा है। वह अपनी सारी सहेलियों के पास जाकर उनको सारी बातें बताती और अपनी खुशी का इजहार करते डोल रही थी। घर पर भी जो आता उससे सोहन बाबू और मोहिनी देवी इसी रिश्ते का जिक्र करते और
इतराते फिरते।

अब सगाई की रश्म किसी अच्छे होटल में धूम-धाम से करने की योजना बनाई जाने लगी थी ।

"अरे बेटा विलास किसी अच्छे होटल की व्यवस्था करो और बाकी की तैयारी भी अपने ही देख-रेख में करना।" सोहन बाबू ने समझाते हुए अपने बेटे विलास से कहा।

"जी पापा जी आप चिन्ता न करें, जैसा आप और मम्मी जी चाहेंगे, उससे बढ़कर ही काम होगा।" विलास ने जवाब दिया। विलास अपने माता-पिता का बहुत ही ध्यान रखता था और उतना ही अपनी बड़ी बहन श्यामा का भी। बहन के ऊपर तो वह अपनी जान ही छिड़कता था। श्यामा दीदी के की किसी भी चीज की ख्वाहिश हो और वह न पूरी हो ऐसा हो ही नहीं सकता था। कानपुर के ही सिविल लाइन के जाने-माने होटल को सगाई के कार्यक्रम के लिए बुक किया गया था। लड़के तथा उसके घरवालों के लिए कपड़े ज़ेवर व सामान सभी कुछ ब्रांडेड और जानी-मानी दुकानों से खरीदी जा रही थी। बेटी के लिए डिजाइनर कपड़े ज़ेवर की सारी खरीददारी के साथ ही साथ एक माह पहले से ही ब्युटिशियन बुक थी। इस सगाई की तैयारी भी ऐसी लग रही थी मानों किसी की शादी ही हो।

खूब धूमधाम से सगाई के कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ। विरेन्द्र प्रसाद भी लड़की के लिए हीरे की अंगूठी और गले का सेट लेकर आये थे। इधर से भी लड़के के लिए हीरे की अंगूठी और चेन, सास के गले का सेट , देवर और ससुर के लिए गले की चेन तथा ब्रांडेड कपड़ों का इंतजाम किया गया था।

लड़के-लड़की ने एक दूसरे को अंगूठी पहनाई और इसके साथ ही शादी ने अपनी आधी मंजिल तय कर ली। पंडित जी ने इसी समय शादी का एक शुभ मुहूर्त भी अपनी पोथी देखकर बता दिया। शादी का शुभ मुहूर्त ठीक पन्द्रह दिन बाद का ही निकला था।

सगाई में फिर वैसा ही हुआ जैसा कि लड़के वाले चाहते थे। सोहन बाबू और मोहिनी जी ने तो चौगुना खर्च किया था। विरेन्द्र प्रसाद के खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। बिना बोले सब-कुछ हासिल होता जा रहा था। लेकिन उनकी सबसे बड़ी ख्वाहिश नर्सिंग होम की थी जिसे वे लोग जल्दी से जल्दी प्राप्त कर लेना चाहते थे।

"भाई साहब अगर आप कहें तो नर्सिंग होम के लिए जमीन देख लूं। आखिर उसे बनने में भी समय लगेगा।" विरेन्द्र प्रसाद ने समय देखकर सोहन बाबू से अपनी इच्छा जाहिर कर दी।

"हां, हां क्यों नहीं आप जमीन देखते रहिए, जैसे ही किसी अच्छी जगह पर जमीन मिले मुझे तुरन्त सूचित कीजिएगा।" सोहन बाबू ने कहा।

"जी एकजमीन तो बहुत अच्छी जगह पर हैं पर उनकी कीमत ही आकाश छू रही है।" विरेन्द्र प्रसाद अब थोड़ा-सा खुलने लगे थे।

"उसकी चिंता आप मत कीजिएगा, दामाद जी का नर्सिंग होम अच्छी जगह पर ही बनेगा। मैं अभी आपको दस लाख का चेक दे रहा हूं जैसे ही कोई अच्छी जगह दिखाई दे, बयाना दे दीजिएगा। शादी के बाद बाकी चीजें देख लेंगे।" सोहन बाबू ने कहा हां, हां क्यों नहीं। शादी की तैयारी में समय भी तो लगता है।

विरेन्द्र प्रसाद के हाथ में दस लाख रुपए आ चुके थे। उनसे उन्होंने कुछ शादी की तैयारी में ख़र्च किया। कुछ पैसे नर्सिंग होम के लिए जमीन या किसी बने बनाए नर्सिंग होम के लिए बयाना देने के लिए सुरक्षित रख लिया।

इधर विराट के शादी की खबर पाकर उसकी प्रेमिका निशा उसपर विफर उठी, "विराट मैं यह क्या सुन रही हूं, तुम मुझे छोड़ कर शादी कर रहे हो?"

शादी नहीं प्रिये, तुम इसे एक समझौता समझ लो, तुम्हारा भी तो सपना है कि मेरा अपना नर्सिंग होम हो?

हां, सपना तो था पर उसके लिए तो तुम मुझे छोड़ कर शादी कर लोगे?

"अरे मेरी भोली निशा, फिर से कह रहा हूं, तुम मेरी हो और सदैव मेरी ही रहोगी। यह शादी तो मैं नर्सिंग होम खुलवाने के लिए कर रहा हूं। लड़की वाले मेरे लिए नर्सिंग होम बनवाने के लिए तैयार हैं। बस मुझे और क्या चाहिए। कुछ दिन बाद मैं उसे तलाक दे दूंगा और फिर मैं तुमसे शादी कर लूंगा।"
विराट ने निशा का हाथ पकड़कर कहा।

निशा भी उसे देखकर और उसकी प्लानिंग देखकर दंग रह गयी। फिर वह एक खिली हुई सी मुस्कान के साथ वहां से चली गई।

कहा तो यह जाता है कि जोड़ियां भगवान के घर से बनकर आती हैं पर शायद ऐसा नहीं है, दुनिया में कभी -कभी जोड़ियां बनाने में पैसा भी अपनी मुख्य भूमिका निभाता है। आगे चलकर इन शादियों का फिर चाहे जो भी हश्र होता हो। कोई विवाह आजीवन चल भी जाता है तो कोई लालच की बलिवेदी पर बलि चढ़ जाता है। श्यामा का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सोहन बाबू ने खूब लेन-देन किया जिसे देख कर सारे देखने वाले दंग रह गए ।

बेटी की विदाई के समय मोहिनी देवी अपनी बेटी को पकड़ कर फफककर रो पड़ीं, आखिरकार श्यामा उनकी इकलौती बेटी थी। सोहन बाबू ने विरेन्द्र प्रसाद का हाथ पकड़कर, उनके और रौशनी देवी की ओर देख कर कहा, "समधी साहब मेरी
श्यामा को कोई भी कष्ट मत देना, अगर आपको उससे कोई भी शिकायत हो तो मुझसे कहना मगर उसकी आंखों में बिल्कुल भी आंसू नहीं आना चाहिए।"

"अरे समधी जी अब आपकी बेटी अब मेरी बेटी है, उसे किसी भी तरह का कष्ट कभी भी नहीं होने देंगे। यह मेरा आपसे वादा है।" विरेन्द्र प्रसाद जी ने कहा।

सोहन बाबू और मोहिनी ने यही सबकुछ अपने दामाद विराट से भी कहा,

"बेटा विराट , श्यामा से कोई भी गलती हो तो आप मुझसे कहना बेटा, मगर उसे कोई भी कष्ट न होने पाए।"

"कैसी बात करते हैं पापा जी, श्यामा को मेरे रहते कभी कोई कष्ट नहीं होगा। आप बिल्कुल भी चिंता मत कीजिएगा। उसके प्रति अब मेरी भी तो कुछ जिम्मेदारी है।" विराट कह तो रहा था मगर वहीं उसके अन्दर एक शातिर शैतान कुटिलता से मुस्कुरा रहा था।

भाई विलास तो श्यामा के साथ उसे पहुंचाने के लिए उसकी ससुराल तक भी गया।

"दीदी अपना ध्यान रखना, सबसे मिलकरअच्छे से रहना। आपका जब जी चाहे आप फोन पर बात करती रहना। तुम वीडियो काल करना।"

"हां,हां भाई तू भी अपना और मम्मी पापा का ध्यान रखना। उनके खाने-पीने और दवा पर ध्यान देना।" श्यामा ने अपने भाई विलास को समझाया।

विरेन्द्र प्रसाद जी का मकान दुल्हन की तरह सजाया गया था। उनके सभी मेहमान और रिश्तेदार विराट की ससुराल से मिले सामानों को देखकर तारीफों के पुल बांध रहे थे। कुछ लोग ऊपर से तो तारीफ कर रहे थे और अन्दर ही अन्दर जले जा रहे थे। दिन भर लोगों का आना-जाना लगा ही रहा। शाम को रिसेप्शन भी बहुत अच्छे होटल में रखा गया था।

श्यामा का बेडरूम बहुत ही करीने से सजाया गया था गुलाब के फूलों से पूरी सजावट की गयी थी। घर के सभी लोग श्यामा को खुश करने में लगे हुए थे। पति विराट ने भी उसे खूबसूरत गले का सेट दिया । वह रात में उसे कुछ जरूरी काम का हवाला देकर घर से बाहर चला गया।

"नहीं-नहीं, आप जरूर जाइए। जो काम जरूरी है उसे कैसे रोका जा सकता है?" श्यामा ने कहा

"लेकिन मम्मी-पापा को पता न चले नहीं तो वे मुझपर बहुत नाराज़ होंगे। मैं सुबह चार-पांच बजे तक आ जाऊंगा।" विराट ने कहा।

"जी बिल्कुल नहीं कहूंगी, आप निश्चिंत होकर जाइए।" श्यामा ने मुस्कुराते हुए कहा।

विराट वहां से सबसे छिपकर बाहर निकल गया

बाहर उसके घर से कुछ दूरी पर उसकी प्राणप्रिया प्रेमिका निशा अपनी गाड़ी में उसका इन्तज़ार कर रही थी। वह जाकर उसकी गाड़ी में बैठ गया और निशा ने मुस्कुराते हुए कहा, "चलें?"

विराट ने उसका हाथ थामते हुए कहा,"चलो।"

विराट के जाने के बाद श्यामा भी कपड़े बदलकर सो गयी। सुबह वह जल्दी उठकर, स्नान करके बाहर निकली तो उसे सामने सासू मां दिखाई दीं। उनके चरण स्पर्श करके उसने मन्दिर के बारे में पूछा और फिर पूजा करके सासू मां के पास रसोई में चली गई।

"अरे बेटा, मैं हूं ना यहां तुम आराम करो। रात में

नींद ठीक से आयी थी? पहली बार मम्मी पापा से अलग हुई हो, मैं समझ सकती हूं बेटा।"

"आप भी तो मेरी मम्मी ही हैं, फिर चिंता किस बात की। अब तो मेरे पास दो-दो पापा जी और दो-दो मम्मी जी हैं।" श्यामा ने रौशनी देवी के गले लगते हुए कहा तो रौशनी जी भी श्यामा की समझदारी की कायल हो गईं।

विराट भी जो सुबह पांच बजे चुपचाप कमरे में आ कर सो गया था, आंख मलते हुए कमरे से बाहर निकलकर बोला, "मम्मी चाय बन गई?

"पहले नहा ले, फिर श्यामा चाय ले जाएगी।" मां ने कहा।

पग फेरों के लिए श्यामा का भाई विलास उसे लेने आया। मायके में सभी लोगों ने उससे उसके ससुराल के बारे में पूछा, किसी ने उसके पति के बारे में पूछा, श्यामा सबसे अपने ससुराल की तो तारीफ करते नहीं थक रही थी। उसकी तारीफों से उसके माता-पिता को दिली सुकून मिल रहा था।

"अरे अभी एक दिन ही तो वहां रही हो, कुछ दिन वहां रुको फिर उन लोगों के बारे में सही जानकारी मिलेगी।" श्यामा की बुआ जी ने कहा।

"और भैया आप जो उन लोगों के लिए नर्सिंग होम खुलवा रहे हो वह श्यामा बिटिया के नाम ही करना उसकी रजिस्टरी श्यामा के ही नाम पर करना ध्यान से।" ललिता ने अपने छोटे भाई सोहन बाबू को समझाया। "हां बहन जी, बिल्कुल सही कह रही हैं। इससे वे लोग बंधे भी रहेंगे, अन्यथा इंसान कब पलटी मार ले उसका कोई भरोसा नहीं है।" श्याम लाल ने अपने मित्र को समझाते हुए कहा।

श्यामा की मां मोहिनी देवी और भाई विलास ने भी बुआ ललिता की बात का समर्थन किया।

पग फेरों में पति अपनी पत्नी को उसके मायके से ले जाने के लिए आता है। विराट भी पत्नी श्यामा को ले जाने के लिए आया।

खूब धूमधाम से विदाई हुई और श्यामा को ढेर सारी हिदायतों के साथ उसे उसके मायके वालों ने विदा किया।

रास्ते में विराट ने श्यामा से कहा, "श्यामा मैं तुमसे जो कुछ भी कह रहा हूं, उसे तुम न तो मेरे माता-पिता से कहना और न ही अपने घर वालों से ही कहना।"

"जी आप बताइए, मैं किसी से भी कुछ नहीं कहूंगी। ऐसी क्या बात है जो सबसे छिपानी है?आप की कोई सहेली है क्या?" श्यामा ने कहा

विराट चौंक पड़ा कि इसको कहीं निशा के बारे में पता तो नहीं चल गया। एकदम से उसके चेहरे पर हवाइयां-सी उड़ने लगीं।

"अरे मैं तो मजाक कर रही थी और आप बुरा मान गए, बताइए क्या बात है?" श्यामा ने विराट के कंधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

"श्यामा मुझे एक बड़ी बीमारी है जिसके बारे में
मैंने अपने माता-पिता को भी नहीं बताया है। अगर
उनको मेरी बीमारी का पता चला तो वे टूट जाएंगे।
डॉक्टर ने मुझे दो साल विवाह करने से मना किया था पर तुम्हारे घर वालों के आगे मैं झुक गया।" अपनी कुटिलता को बेचारगी के आवरण से ढकते हुए उसने मासूमियत बिखेरते हुए श्यामा से पुनः कहा, श्यामा हम लोग दो साल तक एक साथ रहते हुए भी अलग-अलग ही रहेंगे। तुम इस बात की जानकारी किसी को भी नहीं दोगी। अन्यथा मैं अपनी जीवन लीला समाप्त कर लूंगा।"

"कैसी बात करते हैं आप?

नाम - डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा"

पति का नाम - श्री राजेश्वर सिंह

शिक्षा - एम. ए., बी.एड. ,हिन्दी में पीएच.डी., कार्यक्षेत्र - पी.जी.टी. हिन्दी

शिक्षा विभाग दिल्ली में शिक्षण कार्य ।

विधा - कविता , कहानी , लघु कथा , संस्मरण ।

शोध ग्रन्थ -"हिन्दी के पौराणिकप्रबन्ध काव्यों में चरित्र विकास"

प्रकाशन - 1-"जीवन पथ" एकल काव्य संग्रह 2-"पौराणिक प्रबंध काव्यों में चरित्र विकास "3- "आशादीप" एकल काव्य संग्रह 4- "जीवन का समर" एकल कहानी संग्रह 5- "सतरंगी दुनिया" एकल कहानी संग्रह 6- "मेरे नवगीत " एकल काव्य संग्रह 7- "मेरी कुण्डलियां " एकल काव्य संग्रह 8- स्निग्धा की गीतिका एकल काव्य संग्रह 9- स्निग्धा के दोहे 10- "कुछ मन की बातें" एकल काव्य-संग्रह

100 से अधिक सांझा संग्रह में कविता और कहानियां प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन कार्य।